2 सितम्बर 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 11 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (प्रथम), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

डॉ. धनकुमारजी को समन्तभद्र पुरस्कार

जयपुर : यहाँ भट्टारकजी की नसियां स्थित कुन्दकुन्द भवन में दिनांक 6 अगस्त को दिगम्बर जैन सोश्यल ग्रुप फैडरेशन, राजस्थान रीजन के तत्त्वावधान में डॉ. धनकुमार जैन, सूरत का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त प्रो. दयानन्द भार्गव उपस्थित थे।

इस प्रसंग पर सोश्यल ग्रुप फैडरेशन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी पाटनी ने संस्था का परिचय दिया, श्री विनयजी पापड़ीवाल ने टोडरमलजी व बड़ा मंदिर-जौहरी बाजार का परिचय दिया।

सम्मानमूर्ति धनकुमारजी के विषय में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं प्रो. दयानंदजी भार्गव का मार्मिक उद्बोधन प्राप्त हुआ।

डॉ. जैन का परिचय देते हुये कार्यक्रम संचालक डॉ. संजीवकुमार गोधा ने कहा कि उन्होंने 82 वर्ष की उम्र में 'पण्डित टोडरमलकृत अर्थसंदृष्टि अधिकार के गणितीय विश्लेषण' विषय पर पीएच.डी. की है। इस उपलब्धि के लिये उनका नाम 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में दर्ज हुआ है। आपने 23 ग्रन्थों का ढूंढारी से हिन्दी में अनुवाद भी किया है।

सम्मान स्वरूप डॉ. धनकुमार जैन को सभा में बैठे जयपुर शहर के अनेक गणमान्य अतिथियों द्वारा माल्यार्पण, शॉल, श्रीफल एवं 51 हजार रुपये राशि सहित प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुये आचार्य 'समन्तभद्र पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक श्री मणिभद्रजी पापड़ीवाल थे। पुरस्कार राशि श्रीमती विमलादेवी-डॉ.समन्तभद्रजी पापड़ीवाल परिवार की ओर से प्रदान की गई। इस अवसर पर वैद्य सुशीलजी जैन, श्री एन.के.सेठी, श्री एस.के. जैन, श्री नवीनसेन जैन सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

डॉ. भारिल्ल पर एक और पीएच.डी.

शेगुणसी (कर्नाटक) के सरकारी प्रौढ विद्यालय के हिन्दी शिक्षक श्री राजेन्द्रजी सांगावे को मद्रास विश्वविद्यालय से **'डॉ. हुकमचंद भारिल्ल की गद्य विधाओं में जैनदर्शन'** विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। डॉ. सांगावे ने अपना यह शोध-प्रबंध डॉ. डी.बी. पांड्रे (प्राचार्य-पी.एम.कॉलेज, रायबाग) के निर्देशन में पूर्ण किया।

इस उपलब्धि हेतु जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व भी डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व कर्तृत्व एवं साहित्य पर अनेक शोधकार्य किये जा चुके हैं।

आवश्यक सूचना

श्री टोडरमल स्मारक भवन के स्वर्ण जयंती वर्ष के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी शृंखला में वीतराग विज्ञान पत्रिका का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

आपसे निवेदन है कि आप विशेषांक हेतु श्री टोडरमल स्मारक भवन एवं यहाँ से संचालित गतिविधियों के बारे में अपने विचार हमें लेख, निबंध, कविता, संस्मरण, फोटो आदि के रूप में प्रेषित करें। संपादक मंडल द्वारा चयनित रचनाओं को विशेषांक में प्रकाशित किया जायेगा।

कृपया पासपोर्ट साइज के फोटो सहित आप कहाँ व किस पद पर कार्यरत हैं, इसकी जानकारी भी देवें। **- अच्युतकांत जैन**

... और तत्त्वनिर्णय न करने में किसी कर्म का दोष है नहीं, तेरा ही दोष है; परन्तु तू स्वयं तो महन्त रहना चाहता है और अपना दोष कर्मादिक को लगाता है, सो जिनआज्ञा माने तो ऐसी अनीति सम्भव नहीं है। **- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 311**

चलो शिखरजी...

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का
40वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन
सोमवार, दिनांक 10 अक्टूबर 2016

चलो शिखरजी...

श्री टोडरमल स्मारक भवन, स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

पण्डितजी समयसार परमागम की तीसरी गाथा पर प्रवचन कर रहे थे। उन्होंने कहा –''एकत्व निश्चय को प्राप्त भगवान आत्मा ही लोक में सबसे सुन्दर है। जो एकबार उस शुद्धात्मा का दर्शन कर लेता है, उसे फिर संसार में कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

कहा भी है –

'जब आतम अनुभव आवे।
तब और कछु न सुहावे।।'

जो एकबार दाख चख लेता है फिर उसे महुआ नहीं भाता। जिस अमृततुल्य मीठा पानी मिल जाये, फिर भला वह समुद्र का खारा पानी क्यों पियेगा ? जिनके घर देवांगनातुल्य गृहणियाँ हों, वे वेश्याओं के यहाँ जाकर अपना धन क्यों लुटायेंगे ?

पर अनादि काल से इन कामी–भोगी जीवों ने अपनी विवेक की आँख से कभी भगवान आत्मा को देखा ही नहीं है, इसी कारण ये विषयों में फंसे हैं। एकबार यदि यह भेदज्ञान की आँख से उस एकत्व–विभक्त भगवान आत्मा को देख लेता तो संसार के भोगों से स्वत: विरक्त हो जाता और कर्मबंधन से मुक्त हुए बिना नहीं रहता।''

पण्डितजी बोले जा रहे थे, सेठ धनदत्त और सेठानी धनदत्ता एकाग्र मन से सुने जा रहे थे। वैसे तो सभी श्रोता मंत्रमुग्ध थे; पर सेठजी सबसे अधिक प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। उनका तो आज मंदिर आना ही सार्थक हो गया था; क्योंकि उन्हें प्रवचन में पत्र को घर वापस लाने का महामंत्र जो मिल गया था।

वे खुशी–खुशी घर लौट रहे थे, रास्ते में सेठानी ने उनकी प्रसन्नता का कारण पूछा।

सेठजी ने कहा –'अरे महाभाग ! अपने से कितनी बड़ी भूल हुई है जो आज पाँच दिन यों ही खो दिये। यदि पंचमी से ही पंडितजी के इन प्रवचनों को सुनते तो हम निहाल हो जाते।

आज के प्रवचन में ही मुझे महामंत्र मिल गया है, जिससे श्रीकांत बिना किसी प्रताड़ना के सुधर जायेगा और किसी का भी दिल दुखाये बिना ही हमारा बेटा हमें मिल जायेगा।'

'कहो भी तो वह महामंत्र क्या है ?'– धनदत्ता ने बड़ी आतुरता से पूछा।

धनदत्त ने कहा –'कुछ नहीं कल ही अपने बेटे के लिये एक सर्वसुन्दर कन्या की तलाश के लिये नाई और पंडितजी को बुलाकर नगर–नगर में उद्घोष करा दिया जाये। भले ही बेटे के तौल स्वर्णमुद्रायें भी क्यों न देनी पड़े, पर सबसे सुन्दर कन्या के साथ बेटे की शादी करेंगे।'

'उससे क्या होगा स्वामिन् ?'– धनदत्ता ने जिज्ञासा प्रगट की।

'अरे ! जब हमारा बेटा सर्वगुण सम्पन्न सुन्दरी को देखेगा ते उस बालक की भांति जो नया खिलौना देखते ही पुराना खिलौना फेंक देता है, वह स्वत: ही उस नृत्यांगना का परित्याग कर देगा'– सेठ धनदत्त ने खिलखिलाकर कहा।

उपाय तो उत्तम था, कारगर भी था, पर कहने में जितना सरल–सहज दिखता था, प्रयोग करने में उतना आसान नहीं था, फिर भी 'सही दिशा में किया गया प्रयत्न निष्फल नहीं जाता।' इस विश्वास के साथ सेठजी ने श्रीकांत की शादी करने का निश्चय कर लिया और एक सर्वगुण संपन्न सर्वांग सुन्दर तथा गीत–संगीत और नृत्यकला में निपुण सुशील कन्या के साथ उसकी सगाई कर दी गई।

श्रीकांत सुशील और आज्ञाकारी तो था ही, अत: उसने पिता द्वारा की गई सगाई का विरोध नहीं किया; बल्कि उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

जब यह बात उस नृत्यांगना को ज्ञात हुई तो वह चिंतित हो उठी, उसे विचार आया कि श्रीकांत की शादी होने के बाद जब वह उस सर्वांग सुन्दर एवं सर्वगुण संपन्न सुन्दरी को देखेगा, उसके सम्पर्क में आयेगा तो स्वभावत: यहाँ आना छोड़ देगा। अत: उसने सोचा कि शादी अब टल नहीं सकती, अत: ऐसा कोई उपाय करना चाहिये, जिससे वह उसका मुँह ही न देखे।

दूसरे दिन जब श्रीकांत नृत्य देखने को उस नृत्यांगना के नाट्यगृह में पहुँचा तो वहाँ उसने उस नृत्यांगना को अत्यंत उदास मुद्रा में बैठा देखा। देखते ही उसने पूछा –'आज तुम ऐसी उदास क्यों हो ? क्या तुमसे किसी ने कुछ कहा है ? अरे मेरे रहते तुमसे कोई कुछ नहीं कह सकता। जो आँख दिखायेगा उसकी आँख फोड़ दी जायेगी और जो अँगुली दिखायेगा उसकी अँगुली तोड़ दी जायेगी।'

नर्तकी ने कहा –'स्वामी ! ऐसी कोई बात नहीं है, मेरी चिन्ता का विषय और कोई नहीं, आप ही हैं।'

'मैं ! मैं कैसे ? मुझसे ऐसी क्या भूल हुई है ?'– श्रीकांत ने कहा।

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष के अवसर पर
शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर में प्रथमबार डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित

श्री समयसार विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 9 अक्टूबर से शुक्रवार, दिनांक 14 अक्टूबर 2016 तक
(तदनुसार अश्विन शुक्ला अष्टमी से अश्विन शुक्ला त्रयोदशी तक)

अग्रिम-आमंत्रण पत्रिका

सद्धर्मप्रेमी जिनधर्मवत्सल साधर्मी महानुभाव,

अत्यन्त प्रमुदित हृदय के साथ आपको महामांगलिक संदेश प्रेषित कर रहे हैं कि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की प्रेरणा से निर्मित श्री टोडरमल स्मारक भवन अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण करने जा रहा है। इस गौरवशाली अवसर को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के रूप में मना रहा है। इस क्रम में शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर में रविवार, दिनांक 9 अक्टूबर से शुक्रवार दिनांक 14 अक्टूबर 2016 (अश्विन शुक्ला अष्टमी से अश्विन शुक्ला त्रयोदशी तक) श्री समयसार महामण्डल विधान और आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का महामांगलिक आयोजन होने जा रहा है। समयसार के शिखरपुरुष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने इस विधान की रचना की है। उनके मुखारबिन्द से इस विधान का मर्म सुनने को मिलेगा।

टोडरमल स्मारक भवन के स्वर्ण जयंती महोत्सव में देश–विदेश के श्रेष्ठी जन/ विद्वानगण / मुमुक्षु भाई–बहिन के साथ टोडरमल स्नातक परिषद् के 1000 से भी अधिक शास्त्री विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति इस आयोजन को ऐतिहासिक रूप प्रदान करेगी।

इस अवसर पर बालकों के लिये आधुनिकतम शिक्षण पद्धति का प्रयोग करते हुये बाल कक्षाओं का आयोजन भी किया जा रहा है।

आप सभी के हृदयहार टोडरमल स्मारक भवन की स्वर्ण–जयंती महोत्सव के अवसर पर होने वाले इस आयोजन में सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारने हेतु आप सभी को हमारा वात्सल्यपूर्ण

हार्दिक आमंत्रण है।

कार्यक्रम स्थल :– फुटबॉल मैदान, पुलिस थाने के पास, मधुवन–सम्मेदशिखरजी (झारखंड)

फैडरेशन की सभी शाखायें ध्यान दें !

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर शाखाओं एवं सदस्यों को पुरस्कृत किये जाने हेतु विचारणीय मापदण्ड

पुरस्कार एवं पुरस्कारों के मापदण्ड निम्नांकित हैं –

1. वर्ष में विशिष्ट कार्य हेतु विशिष्ट शाखा पुरस्कार – जैसे कि शाखा द्वारा वर्ष में तीर्थयात्रा, आध्यात्मिक शिविर, बैण्ड संगीत मण्डली, नाटक मंचन आदि का आयोजन।

2. वर्ष की सर्वश्रेष्ठ शाखा पुरस्कार –

(१) व्यवस्थित कार्यालय हो – (क) साइन–बोर्ड हो (ख) निरन्तर पत्र–व्यवहार हो (ग) कार्यालय रिकॉर्ड व्यवस्थित हो।

(२) साप्ताहिक/मासिक/पाक्षिक मीटिंग नियमित रूप से होती हो।

(३) पाठशाला का संचालन व नवीन पाठशाला का गठन।

(४) नियमित स्वाध्याय का संचालन।

(५) सामूहिक पूजन का आयोजन – साप्ताहिक/पाक्षिक/मासिक विशेष पर्व।

(६) अन्तिम चुनाव तिथि (नियमित चुनाव का निर्धारित समय पर निष्पादन)।

(७) विशेष सामाजिक आयोजन एवं उनमें योगदान।

(८) शाखा की अपनी व्यक्तिगत विशेषतायें, जैसे : सेवादल, स्वयंसेवक, भजन–मण्डली, बैण्ड इत्यादि।

(९) गोष्ठी एवं विविध प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन।

3. वर्ष के श्रेष्ठ सदस्य पुरस्कार – जो सक्रिय सदस्य हैं एवं तन–मन–धन से फैडरेशन के लिये समर्पित हैं एवं उसकी गतिविधियों को बल प्रदान करते हैं –

4. वर्ष के श्रेष्ठ प्रान्तीय पदाधिकारी पुरस्कार।

5. वर्ष की मीटिंग में शत–प्रतिशत उपस्थिति पुरस्कार।

6. वर्ष में शत–प्रतिशत मासिक प्रगति विवरण प्रेषित करने वाली शाखा पुरस्कार।

7. वर्ष में शाखा द्वारा सत् साहित्य प्रकाशन पुरस्कार।

8. वर्ष में शाखा द्वारा निष्क्रिय शाखा सक्रिय करना अथवा नवीन शाखा गठन पुरस्कार।

9. वर्ष में सर्वाधिक सत् साहित्य बिक्री अथवा वितरण पुरस्कार।

10. वर्ष में सर्वाधिक शाखा सदस्य पुरस्कार (कुल जैन घरों के प्रतिशतानुसार)

11. वर्ष में राष्ट्रीय अधिवेशन में सर्वाधिक शाखा सदस्य सहभागिता पुरस्कार।

12. विशिष्ट सेवाओं के लिये अन्य व्यक्तिगत पुरस्कार।

आपकी शाखा से कम से कम 2 प्रतिनिधियों को अवश्य ही इस अधिवेशन में उपस्थित होना है। फैडरेशन सदस्यों की भोजन व आवास की समुचित व्यवस्था रखी गई है; अत: आप कितने सदस्य कब पधार रहे हैं, इसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय को भेजें।

सभी शाखाओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि पुरस्कार निर्धारण हेतु अपने क्रियाकलापों एवं उपलब्धियों की सूचना हमारे केन्द्रीय कार्यालय को दिनांक 20 सितम्बर 2016 तक अवश्य भिजवा देवें। **– महामंत्री**

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन की –
सभी शाखायें ध्यान दें

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का 40वाँ वार्षिक अधिवेशन दिनांक 10 अक्टूबर 2016 को तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में संपन्न होने जा रहा है। अधिवेशन से पूर्व सभी शाखाओं से अपेक्षा है कि –

- यदि उनके पते में कोई परिवर्तन है तो वे अपने पते के परिवर्तन की अधिकारिक सूचना तुरंत हमारे केन्द्रीय कार्यालय को अवश्य देवें।
- यदि आपकी शाखा की कार्यकारिणी और पदाधिकारियों में कोई भी परिवर्तन हुआ है तो नई कार्यकारिणी के सदस्यों की सूची (मोबाइल नं. व ई–मेल आईडी सहित) हमें तुरंत भेजें।
- आपकी शाखा के क्रियाकलापों की एक संक्षिप्त रिपोर्ट हमें तुरंत भेजें।
- यदि कोई विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं तो उनके फोटोग्राफ भी भेजें।
- अधिवेशन में भाग लेने हेतु आपकी शाखा की ओर से सम्मेदशिखरजी पधारने वाले प्रतिनिधियों की सूची दिनांक 20 सितम्बर तक अवश्य ही हमें भेज दें, ताकि उनके आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके। (आप जानते ही हैं कि यह अधिवेशन श्री समयसार विधान के अवसर पर हो रहा है, जिसके कारण साधर्मियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति के कारण पूर्व सूचना के बिना आवास व्यवस्था संभव नहीं होगी)
- यदि आप अधिवेशन में अपने कोई सुझाव या अपनी शाखा की रिपोर्ट प्रस्तुत करना चाहते हैं तो वह लिखित में दिनांक 31 अगस्त तक हमारे केन्द्रीय कार्यालय में अवश्य भेज दें। पूर्व सूचना के अभाव में अवसर मिलना संभव नहीं होगा।
- अधिवेशन में भाग लेने के लिये पधारे हुये प्रतिनिधियों की अन्तरंग मीटिंग दिनांक 9 अक्टूबर के सायंकाल संपन्न होगी।
- आपको अपनी शाखा के लिये सदस्यता फार्म आदि की आवश्यकता हो तो केन्द्रीय कार्यालय से मंगा लें।

धन्यवाद !

वाशिम (महा.) निवासी श्री सतीश सुनीलकुमार झांझरी की माताजी **श्रीमती कमलाबाई झांझरी** की स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 5100/– रुपये प्राप्त हुये। एतदर्थ धन्यवाद !

स्वर्ण जयंती के मायने (10)

महाविद्यालय का संचालन

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

महाविद्यालय की स्थापना एक युगान्तरकारी कदम

श्री टोडरमल स्मारक भवन में सन् 1977 में पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय स्थापना एक युगान्तरकारी कदम साबित हुआ, जिसने जिनशासन के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया। भगवान महावीर के बाद आज तक 2500 वर्षों में शायद ही कोई समय ऐसा आया होगा जब देश में एक साथ इतनी बड़ी संख्या में जैनदर्शन के अधिकारी विद्वान उपलब्ध हों।

यह संभव हुआ है अनेक संस्थाओं एवं श्रेष्ठियों के सहयोग से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित, पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा और फिर कालान्तर में स्थापित बांसवाड़ा और कोटा के महाविद्यालय के द्वारा।

आज देश में 1000 से अधिक जैनदर्शन के ऐसे अधिकारी विद्वान उपलब्ध हैं जो कि जिनवाणी के मर्म को समझते हैं, आचार्यों के द्वारा रचित जैनदर्शन के मूल ग्रंथों का भाव सीधे पढ और समझ सकते हैं।

यह क्रम निरंतर जारी है और प्रतिवर्ष बनने वाले विद्वानों की संख्या बढती ही जा रही है। आज भी देशभर में ऐसे विद्वान फैले हुए हैं और शीघ्र ही एक दिन ऐसा आयेगा जब देश के गाँव-गाँव और गली-गली में ऐसे विद्वान उपलब्ध होंगे जो आत्मकल्याण के अलावा जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान करेंगे।

महाविद्यालय का स्वरूप व कार्यप्रणाली –

ज्ञातव्य है कि इन महाविद्यालयों में 10वीं कक्षा पास करके आये हुए विद्यार्थी प्रवेश लेते हैं जो संस्कृत भाषा के माध्यम से राजस्थान बोर्ड ऑफ सेकैण्डरी एजुकेशन द्वारा संचालित एक-एक वर्ष क्रमश: उपाध्याय कनिष्ठ और वरिष्ठ का कोर्स करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा संचालित त्रिवर्षीय डिग्री कोर्स पास करके ''शास्त्री'' की डिग्री प्राप्त करते हैं। यह शास्त्री की डिग्री बी.ए, बी.कॉम. व बी.एससी. के समान ही मान्यता प्राप्त डिग्री है और इसके आधार पर वे सभी कार्य (आगामी शिक्षा प्राप्त) किये जा सकते हैं, जो बी.ए, बी.कॉम. व बी.एससी. करने के बाद किये जा सकते हैं।

इसप्रकार एक बार महाविद्यालय में प्रवेश लेने के बाद विद्यार्थी 5 साल तक यहाँ रहकर अध्ययन करते हैं, इन पाँच वर्षों तक उनके आवास व भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था संस्था द्वारा की जाती है।

इन पाँच वर्षों के दौरान वे कॉलेज में शिक्षा पाने और न्याय-व्याकरण का अध्ययन करने के उपरान्त जैनदर्शन के 53 ग्रंथों का गहराई से अध्ययन करते हैं। कॉलेज में शिक्षण के अतिरिक्त टोडरमल स्मारक भवन में भी उनके न्याय-व्याकरण, संस्कृत व अंग्रेजी भाषा व जैन सिद्धांत आदि के शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। विद्यार्थी जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धांतों का मर्म गहराई से समझ सकें इस हेतु से समय-समय पर अनेकों विद्वानों को आमंत्रित करके विशिष्ट विषयों के शिक्षण की विशिष्ट व्यवस्था की जाती है।

प्रति सप्ताह आयोजित होने वाली साप्ताहिक गोष्ठियों में जैन आगम के विभिन्न विषयों पर छात्रों के वक्तव्यों की शृंखला छात्रों में चिंतन एवं शोध-खोज की शक्ति के विकास और विषय-वस्तु के सशक्त प्रस्तुतीकरण की योग्यता विकसित करने में सहायक होता है। प्रत्येक छात्र को वर्ष में अनेकों बार 'छात्र प्रवचन' कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रवचन करने का अवसर दिया जाता है। प्रवचन के अंत में गुरुजन उनके प्रवचन की समीक्षा प्रस्तुत करते हैं, इसप्रकार न सिर्फ वह छात्र वक्ता वरनन सभी छात्र प्रवचन कला की बारीकियों से परिचित होते हैं।

सभी छात्र प्रतिदिन अनिवार्य रूप से पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. के माध्यम से होने वाले प्रवचन सुनते हैं। इस दौरान सभी छात्र प्रवचन में आगम विषय को अपनी-अपनी नोटबुक में लिखते हैं। प्रवचन के अंत में छात्रों से प्रवचन में आगत विषय-वस्तु के सन्दर्भ में प्रश्न पूछे जाते हैं व पूरे प्रवचन का सारांश प्रस्तुत करने को कहा जाता है और अंत में संचालक छात्र स्वयं सम्पूर्ण प्रवचन का विस्तृत सारांश प्रस्तुत करता है। इसप्रकार न सिर्फ पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन की सम्पूर्ण विषयवस्तु छात्रों के समक्ष स्पष्ट हो जाती है वरन् छात्र प्रवचन सुनने-समझने व उसके निष्कर्ष निकालने में प्रवीण हो जाते हैं। संचालन का कार्य भी प्रतिदिन अलग-अलग छात्रों को करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

प्रतिदिन प्रात: टी.वी. प्रवचन के माध्यम से व जयपुर आवास के समय पर होने वाले दैनिक प्रवचनों के माध्यम से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के आचार्यों के मूलग्रंथों के आधार पर गूढ-गंभीर प्रवचन जहाँ एक ओर छात्रों को जिनवाणी के गूढ रहस्यों से परिचित कराते हैं वहीं दूसरी ओर प्रासंगिक रूप से उनके प्रवचनों में आगत रीति-नीति संबंधी बातें और साहित्य के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में रोचक जानकारियाँ छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं।

कंठपाठ योजना के माध्यम से छात्रों के मूलग्रंथों को कंठस्थ करने के लिये प्रेरित व प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे छात्रों को आगम के विभिन्न संदर्भ कंठस्थ हो जाते हैं और अवसर आने पर छात्र बिना ग्रंथों के आधार पर भी प्रवचन करने में व उद्धरण प्रस्तुत करने में सक्षम बनते हैं।

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

दृष्टि का विषय

29 सातवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रवचनसार की ९९वीं गाथा की आचार्य अमृतचन्द्रकृत तत्त्व प्रदीपिका नामक टीका में प्रदेशों की अखण्डता को वस्तु की समग्रता और परिणामों की अखण्डता को वृत्ति की समग्रता कहा है।

तथा दोनों के व्यतिरेकों को क्रमशः प्रदेश और परिणाम कहकर विस्तारक्रम का कारण, प्रदेशों का परस्पर व्यतिरेक और प्रवाहक्रम का कारण, परिणामों (पर्यायों) का परस्पर व्यतिरेक है - ऐसा कहा है।

उक्त तथ्य की गहराई में जाने से एक बात स्पष्ट होती है कि यदि विस्तारक्रम का कारण प्रदेशों का व्यतिरेक है और प्रवाहक्रम का कारण परिणामों का व्यतिरेक है तो प्रदेशों और परिणामों का अन्वय-अनुस्यूति से रचित विस्तार और प्रवाह; क्षेत्र व काल की समग्रता (अखण्डता) का कारण होना चाहिए।

इसप्रकार यह सहज ही फलित होता है कि वस्तु की समग्रता क्षेत्र की अखण्डता है और वृत्ति की समग्रता काल की अखण्डता है।

तात्पर्य यह है कि प्रदेशों में सर्वत्र परस्पर अनुस्यूति से रचित एक क्षेत्र की अखण्डता है और पर्यायों में सर्वदा परस्पर अनुस्यूति से रचित प्रवाह ही काल की अखण्डता है।[१]''

व्यतिरेक का अर्थ होता है अंश, टुकड़े-टुकड़े खण्ड आदि भिन्न-भिन्नपना। जैसे अखण्ड वस्तु का अंश खण्ड है अर्थात् अखण्ड वस्तु का व्यतिरेक खण्ड है। इसप्रकार वस्तु की समग्रता के व्यतिरेक को प्रदेश और परिणामों की समग्रता के व्यतिरेक को पर्याय कहा जाता है।

परिणामों की समग्रता के व्यतिरेक को पर्याय कहते हैं, लेकिन मात्र यह पर्याय पर्यायार्थिकनय के विषय वाली पर्याय नहीं है; क्योंकि पर्यायार्थिकनय के विषयवाली पर्याय में तो प्रदेशों का व्यतिरेक भी शामिल है, गुणों का व्यतिरेक भी शामिल है। जबकि इस पर्याय में मात्र काल का व्यतिरेक ही आता है।

समझने में परेशानी यह है कि दोनों का नाम ही पर्याय है, दोनों को ही पर्याय कहा जाता है। पर्याय का व्युत्पत्ति परक अर्थ देखने योग्य है। व्युत्पत्ति से परि+आय=जो चारों तरफ से भेद को प्राप्त हो, उनका नाम पर्याय है। इसकारण **गुण, प्रदेश, विशेष, परिणाम या भाव आदि सभी पर्यायें हैं।**

१. समयसार अनुशीलन, भाग १, पृष्ठ ७७

अभी जो यह कहा था कि 'यदि विस्तारक्रम का कारण प्रदेशों का व्यतिरेक है और प्रवाहक्रम का कारण परिणामों का व्यतिरेक है तो प्रदेशों और परिणामों का अन्वय अनुस्यूति से रचित विस्तार और प्रवाह; क्षेत्र और काल की समग्रता (अखण्डता) का कारण होना चाहिए।'

यहाँ पर 'प्रदेशों की अन्वय' का तात्पर्य अनुस्यूति से रचित विस्तार है और 'परिणामों का अन्वय' का तात्पर्य अनुस्यूति से रचित प्रवाह है।

जिसप्रकार विस्तारक्रम का कारण प्रदेशों का व्यतिरेक है तो प्रदेशों का अन्वय क्षेत्र की समग्रता (अखण्डता) का कारण होना चाहिए। उसीप्रकार प्रवाहक्रम का कारण परिणामों का व्यतिरेक है, तो परिणामों का अन्वय काल की समग्रता (अखण्डता) का कारण होना चाहिए।

दस नयों में जो एक अन्वयद्रव्यार्थिकनय है, उस अन्वयद्रव्यार्थिकनय का विषय यही अन्वय है।

अन्वय, द्रव्यार्थिकनय का विषय है और व्यतिरेक, पर्यायार्थिकनय का विषय है तथा उस द्रव्यार्थिकनय के विषयभूत अन्वय में गुणों का अन्वय, प्रदेशों का अन्वय और पर्यायों का अन्वय - सभी का अन्वय शामिल है, व्यतिरेक किसी का भी शामिल नहीं है।

दृष्टि के विषय में काल का अन्वय शामिल है, काल का व्यतिरेक शामिल नहीं है; भाव का अन्वय शामिल है, भाव का व्यतिरेक शामिल नहीं है; क्षेत्र का अन्वय शामिल है, क्षेत्र का व्यतिरेक शामिल नहीं है।

इस विषय को समझने के लिए चित्त की एकाग्रता की अत्यन्त आवश्यकता है, इसके लिए चित्त का अन्वय आवश्यक है; यदि चित्त व्यतिरेकों में उलझा हुआ है तो विषय समझ में नहीं आएगा।

मैं एक सही घटना बताता हूँ। मेरे एक श्रोता थे, जो प्रवचन के बाद हमेशा भजन बोला करते थे। बारह महीने वे ही भजन बोला करते थे तथा उनकी डायरी हमेशा उनके साथ रहती थी। उनको हमेशा यही विकल्प रहता था कि कब पण्डितजी का प्रवचन समाप्त हो और मैं भजन बोलूँ तथा उन्हें यह भी विकल्प रहता था कि कहीं दूसरा शुरू नहीं कर दे, कभी-कभी तो ऐसा भी होता था कि मैंने थोड़ी साँस ली तो उन्हें लगता कि प्रवचन खत्म हो गया और वे भजन बोलना शुरू कर देते थे।

एक दिन मैंने उन्हें अकेले में अपने पास बुलाया और उन्हें प्रेम से समझाया कि ''मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूँ कि आप

भजन बोलना बन्द कर दें।'' तो उन्होंने कहा कि ''यदि आपको भजन अच्छे नहीं लगते तो मैं नहीं बोलूँगा।'' मैंने कहा कि ''यह बात नहीं है, मुझे आपके भजन तो इतने अच्छे लगते हैं कि यदि आप रात भर भी सुनाओगे, तो भी मैं नहीं सोऊँगा।'' बोलते–बोलते तुम थक जाओगे, लेकिन मैं नहीं थकूँगा; क्योंकि आपके भजन अध्यात्म से भरे हुए हैं, जब आप ये दौलतरामजी के, भूधरदासजी के भजन बिना गाजे–बाजे के शांतिपूर्वक बोलते हो तो मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।''

फिर उन्होंने पूछा कि ''जब आपको मेरे भजन इतने अच्छे लगते हैं तो फिर आप मुझे बोलने से मना क्यों करते हैं ? तब मैंने कहा कि आपको बोलने से इसलिए मना करता हूँ; क्योंकि जब मैं विषय समझाता हूँ तो आपकी समझ में कुछ भी नहीं आता है, आपको पूरे प्रवचन के समय में भजन बोलने का विकल्प ही निरन्तर बना रहता है। यदि आप भजन बोलना भी चाहते हैं तो ऐसा सोच लें कि यदि मुझे भजन बोलने का अवसर मिला तो बोल लूँगा, नहीं तो दूसरा व्यक्ति बोल लेगा; लेकिन आप प्रवचन सुनते समय यह विकल्प मत रखो कि मुझे भजन बोलना है।''

प्रवचन के पहले मेरे पास बहुत से लोग आते हैं और एक पर्चा देते हुए कहते हैं कि ''साहब! ये सूचना दे देना।'' तो मैं हमेशा उनसे कहता हूँ कि ''जब मेरा प्रवचन समाप्त हो जाय, तब मुझे याद दिलाना; क्योंकि मैं एक घण्टे तक अर्थात् अपने प्रवचन के समय यह बोझ अपने माथे पर लेकर नहीं बैठ सकता; क्योंकि मेरा उपयोग विषय के प्रतिपादन में रहता है।'' इसलिए मैं उनसे हमेशा कहता हूँ कि ''जब प्रवचन समाप्त हो जाय तब मुझे याद दिलाना। यदि कोई पर्चा भी दे, तो भी मैं मना कर देता हूँ।''

ये जो व्यवस्थापक लोग होते हैं, इन लोगों का उपयोग हमेशा व्यवस्था में ही लगा रहता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि धर्म के क्षेत्र में अकेले व्यवस्थापक किसी को नहीं बनना चाहिए, आत्मा के कल्याण की भावना प्रमुख रहनी चाहिए। यदि १० करोड़ का प्रोजेक्ट खड़ा हो जाय और आत्मा समझ में नहीं आए तो वह प्रोजेक्ट कुछ काम नहीं आएगा। यदि आत्मा समझ में आ गया तो वही अगले भव में काम आएगा। अतः व्यवस्थापकों को आत्मकल्याण की भावना को ऊर्ध्व रखना चाहिए।

गुरुदेवश्री की भी एक प्रतिज्ञा थी कि चाहे कुछ भी कार्यक्रम हो, चाहे पंचकल्याणक हो या विधान; उनके दो समय के प्रवचन का समय निश्चित रहता था और उन प्रवचनों में उन्हें कोई फेरबदल तथा किसी की भी अनुपस्थिति स्वीकार नहीं होती थी। सौधर्म इन्द्र, भगवान के माता–पिता, अध्यक्ष, मंत्री–सभी की प्रवचन के ५ मिनिट पहले उपस्थिति आवश्यक थी, यदि कोई समय पर नहीं आता तो पूरा प्रवचन उसी पर होता था।

गुरुदेवश्री का यह नियम इसलिए था; क्योंकि पंचकल्याणक की सारी चीजें प्रवचन के लिए ही हैं। पंचकल्याणक के लिए प्रवचन नहीं है, प्रवचन के लिए पंचकल्याणक है। पंचकल्याणक में भगवान की दिव्यध्वनि देशनालब्धि में निमित्त होती है, ऐरावत हाथी आदि आत्मदर्शन में निमित्त नहीं होते हैं।

बहुत समय पहले ऐसा होता था कि यदि प्रवचन करना हो तो नाटक करके भीड़ इकट्ठी की जाती थी, लेकिन आज गुरुदेवश्री के प्रताप से इसका उल्टा हो गया है। आज यदि नाटक करना हो तो पहले प्रवचन रख दो, भीड़ इकट्ठी हो जाएगी। पहले नाटक भीड़ के आकर्षण के कारण थे, किन्तु आज प्रवचन भीड़ के आकर्षण के कारण बन गए हैं – यह तो हमारा परम सौभाग्य है।

लेकिन सौभाग्य के साथ एक दुर्भाग्य भी रहता है और वह यह कि पहले प्रवचन साध्य होते थे और नाटकों को हम साधन के रूप में प्रयोग करते थे; लेकिन आज नाटक साध्य हो गए हैं और प्रवचन उनके साधन हो गए हैं।

पंचकल्याणकों में इन्द्रसभा के लिए भीड़ जोड़ने के लिए पहले प्रवचन रख देते हैं। इसप्रकार पण्डितजी का उपयोग भीड़ जोड़ने के लिए कर लिया है और जब भीड़ इकट्ठी हो गई तो इन्द्रसभा में इन्द्र नाचने लगे।

अरे भाई ! ये जो प्रवचनों में भीड़ होने लगी है, यह गुरुदेवश्री का ही पुण्य–प्रताप है और यदि हम अपने कार्यक्रम की सफलता के लिए प्रवचनों का साधन के रूप में प्रयोग करते हैं तो यह हमारा दुर्भाग्य है।

हमें गुरुदेवश्री से इतनी बढ़िया चीज मिली और हमने उसका गलत प्रयोग किया। ये तो हमारा परम सौभाग्य है कि प्रवचन सर्वाधिक उपस्थिति के कारण हैं; हमें दूसरे कारणों से भीड़ इकट्ठी नहीं करनी पड़ती है। प्रवचन की घोषणा ही उसके लिए पर्याप्त है।

दूल्हे के लिए बारात है या बारात के लिए दूल्हा ?

अरे भाई ! दूल्हे के लिए बारात है। वैसे ही तत्त्वज्ञान में आत्म कल्याण की भावना प्रमुख रहती है। जब हमारे चित्त में तत्त्वज्ञान की ऐसी महिमा आएगी, तभी दृष्टि का विषय हमारी समझ में आएगा, अन्यथा नहीं। ●

शिखरजी में विशाल विद्वत्सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में दिनांक 11 अक्टूबर को विशाल स्तर पर विद्वत्सम्मेलन का आयोजन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचंद भारिल्ल की अध्यक्षता में किया जा रहा है। इस अवसर पर विद्वत्परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक भी बुलाई गई है, जिसमें आगामी कार्ययोजना पर विचार किया जायेगा। इस सम्मेलन में लगभग 1000 विद्वानों के उपस्थित होने की संभावना है। **– अखिल बंसल, महामंत्री**

(पृष्ठ 5 का शेष...)

प्रतिदिन खेलकूद के माध्यम से शारीरिक व्यायाम तथा वर्ष में एक बार आयोजित होने वाली खेलकूद प्रतियोगिताएं बालकों के शारीरिक व मानसिक विकास में सहायक होती हैं।

मात्र शारीरिक ही नहीं वरन् विभिन्न विधाओं में आयोजित प्रतियोगिताएं यथा कवि-सम्मेलन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, संस्कृत श्लोक पाठ प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता आदि उनके मानसिक विकास को सुनिश्चित करती हैं।

अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त जयपुर में साल में दो-तीन बार आयोजित होने वाले शिक्षण शिविरों एवं वार्षिकोत्सव के कार्यक्रमों में व्यवस्थाओं में भाग लेने के कारण उनमें प्रबंधन शक्ति का विकास होता है।

पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व, अष्टाह्निका महापर्व आदि अवसरों पर प्रवचनार्थ बाहर जाने के कारण जहाँ एक ओर उनकी प्रवचन शैली में निखार आता है, वहीं दूसरी ओर समाज, सामान्यजन तथा जनसमूह की मानसिकता को समझने व उनसे उपयुक्त व्यवहार करने की क्षमता का विकास होता है।

देशभर में आयोजित होने वाले पंचकल्याणकों, विधान और शिक्षण शिविरों व ग्रुप शिविरों में जाकर उनके संचालन में योगदान देने के कारण उनमें आयोजन क्षमता का विकास होता है व प्रस्तुत चुनौतियों से निपटने की क्षमता विकसित होती है। इसप्रकार हम देखते हैं कि जहाँ एक ओर अन्य विधाओं में स्नातक छात्रों को जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिये व कार्यक्षेत्र में काम करने की योग्यता विकसित करने के लिये, व्यक्तित्व में गंभीरता व व्यवहार में परिपक्वता के विकास के लिये आगे भी एम.बी.ए. आदि डिग्रियाँ लेने की और कार्यक्षेत्र में वर्षों के अनुभव की आवश्यकता होती है, महाविद्यालय के छात्र अपने स्नातक कक्षा में अध्ययन के दौरान ही इन सब कलाओं में पारंगत होकर पूरी तरह से परिपक्व व्यक्तित्व के धनी हो जाते हैं। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 2 का शेष...)

नृत्यांगना ने दुःखी मन से कहा –'श्रीकांत ! भूल आपसे नहीं आपके पिताजी से हुई है।'

आश्चर्यकित हो श्रीकांत ने पूछा –'क्या कहा ? भूल और मेरे पिताजी से ! असंभव।'

नृत्यांगना ने कहा –'घबराओ नहीं, मैं जो कहती हूँ उसे ध्यान से सुनो। एक ज्योतिषी आया था, वह कहता था कि श्रीकांत की शादी जिस कन्या से हो रही है, उस कन्या का मुख देखते ही श्रीकांत अन्धा हो जायेगा। बस यही मेरी चिन्ता का विषय है।'

श्रीकांत बोला –'बस इतनी-सी बात है, ठीक है, मैं उसका मुँह ही नहीं देखूंगा फिर तो कोई भय नहीं है – अब तो ठीक है न ? अब तुम प्रसन्न हो जाओ और हमें प्रसन्न करने के लिये नृत्य प्रारम्भ करो।' **(क्रमशः)**

शोक समाचार

(1) अनसिंग-वाशिम (महा.) निवासी श्री मोतीराम अंतीदास मुलावकर गुरुजी का 89 वर्ष की आयु में दिनांक 2 जुलाई को णमोकारमंत्र के स्मरणपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 200/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) मैनपुरी (उ.प्र.) निवासी श्री हर्षवर्धनजी जैन (वकील) का 63 वर्ष की आयु में दिनांक 7 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप मैनपुरी फैडरेशन के निर्भीक एवं सक्रिय कार्यकर्त्ता थे।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127